International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746, Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 1; Issue 9; September 2016; Page No. 46-47

बदलती स्त्री छवि का अंकन

रेनुका कुमारी

पी-एच0डी0, हिन्दी विभाग, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

स्वतन्त्र भारत की स्त्रीवादी चिन्तन परम्परा में महिला लेखिकाओं की प्रबल भागीदारी में कश्मीरी लेखिका चन्द्रकान्ता का नाम महत्वपूर्ण है कथा साहित्य में अपने स्त्री की मौन छटपटाहट को मुखरवाणी देते हुए रूढ़िवादिता और थोपी हुई परम्पराओं से उभरती नारी को अपनी पहचान खोजते दिखाया है यह निश्चित रूप से आपकी बौद्धिकता का परिचायक है।

स्त्री प्राचीनकाल से ही सामाजिक सृष्टि का मूलाधार रही है, चूँकि स्त्री के बिना किसी भी समाज का विकसित और समृद्ध होना असम्भव है, फिर भी समाज में स्त्री अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के साथ मानवी के रूप में स्थापित नही हो सकी है। भले ही हमारी सामाजिक व्यवस्था में स्त्री आदर्श समर्पिता पत्नी आदर्श ममतामयी माँ, आदर्श आज्ञाकारी बेटी और आदर्श बहन के रूप में स्वीकार्य होती रही हो, परन्तु आज भी उसे अपने स्वतंत्र अस्तित्व को पाने के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ रहा है।

स्त्री जीवन के विकास और उसकी सर्वांगीण प्रगति में आधुनिक हिन्दी साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है सभी महिला कहानीकारों ने अपने कथा लेखन में स्त्री जीवन की विविध समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए उनके समाधान भी प्रस्तुत किए हैं।

सारांश

आज की आधुनिक नारी की छवि में बहुत परिवर्तन हुआ है। नारी, मुक्ति 'स्व' के प्रति जाग्रत अस्तित्व चेतना जैसी भावनाओं से संस्पर्शित दिखाई देते हैं। इस पुरूष प्रधान समाज में इतनी अधिक विषम स्थिति में पश्चात् भी भारतीय स्त्री समाज में अपना अस्तित्व तलाशने के लिए प्रयत्नशील है। वह घर की घुटन भरी जिन्दगी से बाहर निकलकर उन्मुक्त आकाश में विचरण करने वाले पक्षियों की भाँति साँस लेने लगी है। वह मानवी के रूप में प्रतिष्ठित हो रही है।

वर्तमान में स्त्री अपने समाज में मानवी के रूप में स्थान दिलाने के लिए अपने अस्तित्व, अपनी अस्मिता की पहचान के लिए अधिकारों के प्रति जागरूक और प्रगतिशील हो गई है। नैतिकता के परम्परावादी मूल्यों में तथा उसकी सोच में परिवर्तन आ गया है और आधुनिक प्रगतिशील स्त्री के विचारों में परिवर्तन आने का मुख्य कारण नहीं अस्मिता की पहचान की तड़प है। अतः स्त्री, स्त्री को अपने अस्तित्व की पहचान करा रही है।

आज की स्त्री को उसकी सामर्थ्य बताने की आवश्यकता है, उसे प्रेरित करने की आवश्यकता है तभी वह अपने अस्तित्व को जान सकेगी। कथाकार, चन्द्रकान्ता ने नारी जीवन में बदलती स्त्री छवि अंकन का चित्रण प्रस्तुत किया है साथ कही संकट को दूर करने की चेष्टा भी की है। वह नारी को अस्तित्व को तराशने माँझने के कार्य में संलग्न है स्त्री आज खुलकर जीना चाहती है और अपनी इच्छा और कामना को दफन नही करती। वे निष्क्रिय उदासीनता के बदलते जोखिम लेना अधिक पसन्द करती है आज स्त्री को अपने विचलित अस्तित्व की खोज को स्थापित करने में भी अनेकों संघर्षों का सामना करना पड़ता है।

उपसंहार

'फिलहाल' कहानी में आरती जयदेव से प्यार करती हैं परन्तु वह उसको बिना बताये नागपुर चला जाता है आरती उसके जाने के बाद दुःखी नही होती है, बल्कि अपने में बदलाव लाती है। वह अपने बाल बॉयकट करवा लेती है और नाक में छोटी सी सफेद लौंग पहनती है और इन सब के बीच वह अपने भैया–भाभी और अन्य रिश्वतेदारों के ताने भी सुनती है। सभी कहते है– "आरती भी खुश है उसने बाल कटवाकर बॉयकट करवा लिये हैं। नाक में छोटी सी सफेद लौंग डाल दी है। नीला उसके बदलते ढंग को देखकर मन ही मन ईर्ष्या से कुदती है जाने उम्र के ढलते दोरे में मजनू मिला है? देखने की बड़ी उत्सुकता है पर फिलहाल वह विदेश गया है न।''

आधुनिक नारी में पुरूषतत्व की भावना जाग्रत हो गई है। वह पुरूषों से प्रति स्पर्द्धात्मक दृष्टि कोण रखती है। 'धराशायी' कहानी वी0वी0 अपने काम बहुत ही मगन से करती है अपनी पदोन्नति के लिए उचित है – होगी होगी। साहब साहनुभूति से बोले थे – 'अभी तो एक जप मिला है जल्दी कुछ और करेंगे। तुम अपना काम करो; पदोन्नति की चिन्ता हम पर छोड़ दो'। वी0वी0 इस टालू उत्तर से सन्तुष्ट होने वाली नहीं और न हुई। कर्म के सिद्धान्त से वैर न होने पर भी वे कल की चिंता छोड़ दो। वी0वी0 टालू उत्तर से सन्तुष्ट होने वाली नहीं और न हुई। कर्म के सिद्धान्त से वैर न होने पर भी कल की चिंता छोड़ नहीं सकती थी, बल्कि उन्हें विश्वास था स्त्री यही मार खाती है।''

वह शिक्षित नारी में विवाह के प्रति बदलाव आया है वह विवाह के प्रति उदासीन रहती है। विवाह करती भी है तो उनके व्यक्तितत्व में काफी बदलाव आ गया है 'एक युद्ध और' कहानी की मिन्नी का विवाह है किसी ने उसकी साड़ी का परदा नीचे खींच दिया तो वह कहती है – ''यह तो एक दिन का नाटक होता है,, मिन्नी। समझ लो तुम मंच पर अभिनय कर रही हो'' मेरी मिन्नी के कान में फुसफसाती हैं। अभिनय ही तो। मुन्नी मुस्कराई है आखिर।'' यानि इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि आज की नारी विवाह से विमुख होती जा रही है वे अब परदे में नहीं रहना चाहती। वह मुक्त होना चाहती है। यहीं नहीं आज की नारी अतिथियों के साथ पहले जैसा अपनापन नहीं करती है। आज उन्हें विवाह में आती हुई, बहन, ननद बुआ बोझ लगती है।

आज नारी पुरूष से दबकर नहीं रहती। बल्कि उसक साथ चलती है और नारी अपने रास्ते स्वयं ढूँढती है। 'बात ही कुछ और' कहानी में राधाकृष्ण की बेटी लड़कों की तरह इंजीनियरिंग कर रही हैं। वह अपने फैंसले खुद लेती है और वह होस्टल में रहते–रहते काफी आत्मनिर्भर हो गई हैं। ''उन दिनों इंजीनियरिंग की ट्रेनिंग के खडगपुर गयी थी। होस्टल की जीवन जीते काफी कुछ आत्मनिर्भर रहना भी सीख गई थी। माता–पिता खुश थे चलो

बेटी सही दिशा में आगे बढ़ रही है। गर्व से उनका माया भी दो इंच उठा था। बेटी खुद बनेगी, माता–पिता क स्वप्न भी उसमें सच हो जाएँगे।''

निष्कर्ष

समग्र अध्याय का विवेन विवेचन के बाद कहा जा सकता है कि करने चन्द्रकान्ता साठोत्तरयुगीन एक सफलतम साहित्कार हैं उन्होंने अपने अनुभव रूपी स्याही से साठोत्तरयुगीन कलम के द्वारा साहित्य विधाओं रूपी कागज उतारा है परन्तु अपने रचना संसार में बदलती स्त्री छवि का अंकन किया है।

सन्दर्भ

1. जलकुण्ड का रंग और नुसरत की आँखें (अब्बू ने कहा था' कहानी संग्रह)
2. वैचारिक संकलन मई 1997 पृ066
3. वही पृ0 21
4. डा0 अमोल कासार, चन्द्रकान्ता का कथा साहित्य– पृ0 6
5. डा0 आभा मेहता स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में वैचारिकता पृ0 13
6. डा0 राम प्रकाश अग्रवाल आधुनिक काव्य (प्रस्तावना), पृ0 9
7. वार्ष्णय, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ0 15
8. 'फिलहाल' (सूरज उगने तक कहानी संग्रह) चन्द्रकान्ता पृ0 127
9. 'धराशायी' सूरज उगने तक' कहानी संग्रह चन्द्रकान्ता पृ0 127
10. 'बात की कुछ और' (सूरज उगने तक' कहानी संग्रह), चन्द्रकान्ता पृ0 66
11. 'फिलहाल; ('दहलीज पर न्याय' कहानी संग्रह), चन्द्रकान्ता पृ066
12. हिन्दी कहानी और स्त्री विमर्श, उषा झा, साक्षी प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण – 2005
13. आधुनिक काव्य प्रस्तावना, डा0 राम प्रकाश अग्रवाल
14. आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारी, साहित्य निकेतन कानपुर प्रथम संस्करण – 2007
15. इक्कीसवीं सदी की ओर, सुमन कृष्णकान्त, राजकमल प्रकाशन दिल्ली संस्करण – 2001
16. एक जमीन अपनी चित्रा मुद्गल राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1976
17. कामकाजी भारतीय नारी, प्रोमिता कपूर राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली प्रथम संस्करण 1976
18. खुली खिड़कियाँ, मैत्रेयी पुष्पा, विजन वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली –1989
19. ठीकरे की मंगनी, नासिरा शर्मा, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1989
20. तत् सम, राजी सेठ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1977